

## आधुनिक हिन्दी-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (भाग-01)

हिन्दी के साहित्यिक इतिहास में आधुनिक काल का आरंभ भारतेन्दु जी से हुआ है जिसका काल 1857 ई. लिखित है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं:-

1. पद्य के साथ गद्य का विकास:- इस काल की सर्वप्रमुख विशेषता यह रही है कि इसमें पद्य के साथ गद्य का विकास हुआ। भाषा पूर्ण खड़ी बोली हिन्दी थी। गद्य के साथ ही मनु और विशेषता रही है कि मानव ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति बहुत ही सरलता के साथ किया है। इसके फलस्वरूप ही नारद, रुक्मी, कहानी, उपन्यास, निबंध, समालोचना गद्यकाव्य, रेखा-चित्र, जीवन, संस्मरण, कविता, पत्र, प्रोफाइल, कृत, वीक्षा, पुस्तक-समीक्षा, इतिहास, आत्मकथात्मक साहित्य आदि का पूर्ण विकास हुआ। मुद्रणकला के विकास के साथ गद्य का विकास हुआ ही इसके साथ इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि गद्य में ही लिखे जाने लगे।

2. भाषा का परिवर्तन:- इस काल में दूसरी प्रवृत्ति रही है भाषा परिवर्तन की जिस कारण प्रजाभाषा को पूर्ण स्वीकार लेना पड़ा। खड़ी बोली ने अपना सभ्य प्रभाव जमा लिया। आधुनिक काल में नवयौवना की जागरूक करने की जिस भाषा की आवश्यकता थी वह खड़ी बोली ने पूरी कर दी। इसी कारण जन जीवन का चित्रण बिल्कुल ही आसान हो गया। यह सब सरल एवं वैज्ञानिक भाषा बन गयी। खड़ी बोली में जहाँ स्वाभाविकता थी वहीं इसने अपने में अंग्रेजी और उर्दू को भी मिलाकर अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर दिया।

3. राष्ट्रीय भावना का उत्थान:- आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों में राष्ट्रीय भावना का उत्थान हुआ जिससे राजनीतिक चेतना की अत्यधिक वृद्धि हुई। राज्यभक्ति, देशभक्ति, अतीत भारत का गौरव गान, वर्तमान स्थिति पर पश्चात्ताप, नवीन जागरण का संदेश आदि प्रवृत्तियों राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप ही आई। इसी बीच कांग्रेस की स्थापना हुई जिसने देश का राजनीति समीक्षण ही बरत दिया। देश की दुर्दशा का ज्ञान संगठन की सन्ध्योपेरण, राष्ट्रप्रेम, आत्मबलिदान की महत्ता, स्वायत्ताधिकार तथा स्वतंत्रता के उपासकों का अशौचान, राष्ट्रीय प्रेमभावना में वीर प्रजा स्वतंत्रता प्रेम मानवतावादी विचारधारा अंतराष्ट्रीय विषयबहुत्व की भावना तथा पंचशील पर आधारित विश्वशांति एवं सहकारित्व की भावनाएँ क्रमिक रूप से विद्यित हुई।

4. नवयुग की चेतना का विवेकचन:- इस काल में नवयुगीन चेतना के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। साहित्य का प्रतिपाद्य उच्च वर्ग नहीं रह गया, इसके स्थान पर जनवादी विचार धारा का साहित्य लीव होने लगा। आदर्श के स्थान पर यथार्थ का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया गया। निम्न वर्गीय समाज एवं शोषितों के प्रति व्यापक सहानुभूति प्रदर्शित की गई। मार्क्सवादी विचारधारा से शोषितों के प्रति अत्यधिक सहानुभूति व्यक्त किया गया। कथा के नायक सामान्य श्रमिक भ्रजद्वर, गरीब, बीखारी बेसहारा बच्चे आदि को बनाया गया। अंग्रेजी सत्ता का घोर विरोध एवं देशी वस्तुओं का प्रोत्साहन किया गया। समाज में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी तथा अत्याचार का वास्तविक रूप साहित्यिक रचनाओं में खुलकर दिखाया जाने लगा।